दृष्टान्ततरङ्गिणी ।

काशीवासी सन्यासी

श्रीमद्दीनदयालगिरि प्रणीत ।

जिस्को

डुमराँव निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि ने बड़े परिश्रम से शुद्ध कार प्रकाशित किया ।

"अधूरा देखने से न देखना अच्छा"

यह पुस्तक भरतजीवन प्रेस के अधिकार में छपी और उक्त प्रेस में मिलैगी ।

काशी

भारतजीवन प्रेस मे मुद्रित हुई ।

सन् १८८२ ई० ।

प्रथम बार १०००   ]   मूल्य ।)